जनजातीय समाजों में परंपरागत सांस्कृतिक केन्द्र धमकुड़िया की स्थिति

डॉ. सुरेन्द्र ठाकुर

प्राचीन काल से चली आ रही धमकुड़िया की संस्कृति आज भी प्रत्येक उराँव गांव में अस्तित्व में है जिससे आदिवासी समाज की पारंपरिक संस्कृति की प्रवृति वर्तमान समय मे भी बनी हुई है। झारखण्ड राज्य के छोटा नागपुर उराँव जनजाति वर्तमान समय में वह अपने पारंपरिक सांस्कृतिक केन्द्र धमकुड़िया से संगठित और संचालित होते हैं। आदिवासियों में उराँव जनजाति एक प्रमुख जनजाति है। जो जनसंख्या की दृष्टि से झारखंड में दूसरे स्थान पर आता है, यह मुख्यतया झारखंड राज्य के छोटा नागपुर के रांची, गुमला, लोहरदगा, हजारीबाग और सिंहभूम जिलों में निवास करते हैं। बिहार में यह पूर्णिया, सासाराम आदि जिलों में छिटपुट रूप से पाये जाते हैं। इनकी भाषा कुरूख है।

उरांव जनजाति समाज के युवक–युवतियों को समाजिक सांस्कृतिक विशेषताओं की जानकारी धमकुड़िया के माध्यम से आसानी से प्राप्त कराने का केन्द्र बनाया गया है जिससे कि उरांव संस्कृति को बचाये जाने का संस्थानिक प्रयास होता है किन्तु आज उरांव समाज से धमकुड़िया का अस्तित्व समाप्त होते जा रहा है।